ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 206-207

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

हिन्दी कविता के अवधूत कवि : महाकवि निराला

मुकेश कुमार मिश्र
प्राचार्य, करमा देवी स्मृति पी0जी0 कालेज, संसारपुर–बस्ती (उ0प्र0), भारत

Received- 14.08.2020, Revised- 18.08.2020, Accepted - 20.08.2020 E-mail: - mishramukesh602@gmail.com

सारांश : ***महाप्राण पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य के ऐसे ही विरे–नवीन विभूतियों में अग्रणीम है, जिन्होने अपने जीवन का कण–कण माँ भारती के पद–पद्मों में निष्काम भाव से समर्पित कर दिया, निराला जी सामाजिक दृष्टि से विपन्न और सर्वहारा की कोटी के प्राणी थे, साहित्यिक .ष्टि से इतने महान व्यक्तित्व के धनी व सिर–मौर साहित्यकार आजीवन अभाव ग्रस्त रह कर मानव जीवन के दुःख–दर्द को झेलता हुआ अपनी अखण्ड दिव्य–साहित्य में शाश्वत डटा रहा, उन्होने व्यक्तिगत और जीवन की विंसगतियों को सहन किया, महाप्राण के व्यक्तित्व में कोमलता, भावुकता, सहनशीलता, विद्रोह, संकोच, चिन्तन, पौरूश, करूणा आदि का सामजस्य था।***

कुंजीभूत शब्द– महाप्राण, हिन्दी साहित्य, नवीन विभूतियों, अग्रणीम, निष्काम भाव, समूपत, सामाजिक दृष्टि ।

निराला ने मनुष्य की हद्य निर्मलता और उसके अन्तःकरण के करुणित प्रतिबिम्ब को एहसास किया था, यह माना जाता है कि भावना मानवता के उच्च आदर्श सें अद्भूत होती है, सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करूणा का प्रसार आवश्यकता है उनका दुःख सकल दीन दुखियों की मार्मिक अभिव्यक्ति है वे जितना उदार थे उतना ही करूणामयी और सहद्यी भी हिमालय के समान व्यक्तित्व की विशालता के लिए उनकी सहज द्रवण शीलता करूणा की गंगा बन जाती थी वह उस स्थिति में किसी के दुःख को दूर करने के लिए अपना सब कुछ त्याग कर देते है– वह अपने विशालकाय की भॉति हद्य की विशालता व उदारता का भी परिचय दिया है वे महामानव थे, उन्होंने निंजभाई को दुःखी देखा और उस दर्द की संवेदना की सहज–परिणति के रूप मे वह एक अलग शैली, मैं का प्रयोग किया।

"देखा दुःखी एक निज भाई/दुःख की छाया पड़ी हद्य में झट उमड़ वेदना आई/मैने मै शैली अपनाई उन्होंने पूँजीपतियों, जमींदारो और भ्रष्ट नेताओं पर स्दैव कोप दृष्टि बनी रही, "कुकुरमुता" में उन्होंने कुकुरमुता को सर्वहारा वर्ग तथा गुलाब को पूंजीवाद के प्रतीक रूप में खड़ा करते हुए पूँजीपतियों पर करारा प्रहार किया–

"अबे, सुन गुलाब/भूत मत जों खुशबु रंग खूब चूसा खाद का तूने अशिष्ट/डालपर इतरात हे कैपपिलिट

उनका जीवन सामान्य जनता से परमपरित हो, सदैव एक करूण दृश्य उपस्थित करता है उनकी 'भिक्षुक' कविता इस संन्दर्भ में उल्लेखनीय है, जिसमें वह अपनी दीन–जर्जर काया और रिरियाती वाणी से कवि के कलेजे को टूक–टूक कर देता है

निराला ने स्वंय अपने जीवन में बहुत कष्ट झेले, यही कारण है कि उनके साहित्य में यथार्थ का तीखा रंग मिलता है उनके काव्य मे नारी तथा दलित के प्रति जो सहानुभूति देखने को मिलती है। वह रुप उस समय के तत्कालीक कवियों में प्रायः अभाव सा दिखाता है वह अपनी कविता 'विधवा' में तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने वाली 'विधवा' को इष्टदेव के मंदिर की पूजा के योग्य माना है, वह दीपशिखा की भाँति वह दुःख की ज्वाला में जलती हुई शांत है, वह उसें करूणा की प्रतिमूर्ति है–

"वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी

वह दीप शिखा सी शांत, भाव में लीन निर्धन, पीड़ित शोषित एवं अत्यन्त उपेक्षित व्यक्तित्व की जीवन शैली का वास्तविक रूप उनकी कविता–कामिनी का प्राण है कविता का यथार्थ उनका परम प्रयोजन है उनका वैयाक्तिक जीवन अनेक संघर्षो एवं झंझावतों से ओतप्रोत था। सामाजिक जीवन में भी वह कम चोटिल नही हुये, कभी भी वे थके–हारे, दबे, झुके नही अपितु सहन करते रहे, झंझावातों से मुँह न मोडना उनके जीवन का कटु अनुभव रहा, वह शोषित एवं पिछड़ो के प्रति संवेदन शील दिखालायी पड़ती है– वह परम प्रभु सें प्रार्थना करते है–

"दलित जन पर करो करूणा दीनता पर उतर आए, प्रभु तुम्हारी कृपा करूणा" ।

दुख ही जीवन की कथा रही/क्या कहूँ आज, जो नही कही" वह विवेकान्नद के वेदांत दर्शन से प्रभावित रहे, उन्होने अपने जीवन काल में बहुत सी अपेक्षा मिली, निजी दुःख भी उनके काव्य का विषम रहा, वह पीड़ितों के

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

पक्षधर रहे, उनका कंढ सदैव पीड़ितों कों उद्घोषित करते हुयें, आगे बढ़ता रहा है–

"आज अमीरों की हवेली/किसानों की होगी पाठशाला धोबी पासी चमार तेली/ खोलेंगे अँधेरे का ताला एक पाठ पढ़ेगे, टाट बिछाओं/जल्दी–जल्दी पैर बढ़ाओं"।

युग सर्जक 'निराला' जी का यह विश्वास था वर्ग–संघर्ष से जो क्रान्ति उत्पन्न होगी वह शोषक और शोषित के भेद भाव को समाप्त करेगी, 'बादल राग' कविता की उनकी कई पंक्तिया इसका गवाह है–

"समान सभी तैयार कितने ही है असुर, चाहिए कितने तुझको हार? आध्यात्मचिंतन, निराला के काव्य का एक आधार रहा, उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व के निर्माण में अध्ययन, चिंतन–मंथन एवं परिवेश का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, उन्होंने भारतीय वेदांत और उपनिषद्–साहित्य का गहरा अध्ययन किया था।

"तुम हो अखिल विश्व में/या यह अखिल विश्व है तुम में अथवा अखिल विश्व तुम एक"।

राजनीति उनकी मुक्तिकामना का विशेष पहलू रहा है। उनका ओज गुण सदैव राष्ट्रीय जागरण के लिए तत्पर रहा, देश वासियों में राष्ट्र–भक्ति की भावना संचरित करने हेतु उन्होंने प्राचीन भारत के श्री सौभाग्य का प्राध्यापन किया, अतीत गौरव के साथ वर्तमान दुर्बलता पर वह शोक एवं दुःख व्यक्त करते है अस्तंगत काल रात्रि, महाराज शिवाजी का पत्र, 'राम की शक्ति पूजा, जैसी कविताओं में वह शक्ति का आवहन करते है 'रावण पर विजय पाने के लिए शुद्ध शक्ति का संचम राम, गुरु गोविन्द सिंह सवा सवा लाख पर एक– एक चढ़ाने, शिवाजी महाराज को औरंगजेब को छेड़ने के लिए शक्ति संचय को वह आवश्यक मानते है, उनकी यह पक्ति कुछ इसी की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करती है–

"व्यक्तिगत भेद ने/हीन–ली हमारी शक्ति कर्षण–विकर्षण– भाव/जारी रहेगा यदि इसी तरह आपस में"।

परिमल की अनेक कवितायें सामाजिक दृष्टि के उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करती है सामाजिक जीवन के प्रति उनकी दृष्टि दार्शनिक रही है, इसलिए सामाजिक जीवन विषमताओं के प्रति उनका आक्रोश आसुओं में धुल गया है उनकी 'विधवा' कविता में सहजता के भावूक मन की परिकल्पना 'इष्टदेव के मंदिर की पूजा' के समान है, वह उसें 'व्यथा की भूली हुई कथा' मानते है परन्तु नेता धर्म से अधिक कवि धर्म को उनकी गहरी पहचान है 'विधवा' कविता की कुछ पंक्तिया इसकी व्याख्या करती है।–

कौन उसको धीरज दे सके? दुखी का भार कौन ले सके?

उनका कोमल हद्य छायावाद की विशिष्ठता को बढ़ाता है, पर उसके उतरोतर विकास के प्रति 999 तो है, परन्तु प्रगति और प्रयोगवाद समाज की सढ़ियों पर उनकी काव्य लेखनी भी खूब चली है, उसके लिए व्यंग्यता का काव्य रूप चुना है, 'रानी और कानी' कविता में वह मातृहद्य की कोमल वृत का परिचय देते हुये समाज भी उस प्रवृत्ति पर प्रहार करते है, जिसमें लड़की के विवाह के लिए गुण नही रूप ही प्रमुख है उनकी प्रमुख कविता 'कुकुरमुता' मं न केवल पूँजीवाद पर प्रहार किया है बल्कि आत्मप्रशंसक कुकुरमुतें के द्वारा शिक्षा तथा संस्ति से विहिन सर्वहारा वर्ग पर तीखा व्यंग्य किया है उनकी प्रगतिशील रचनाओं में नव–समाज के निर्माण की कामना है जहाँ वेदना का संसार मूर्च्छित पड़ा है।

निराला बीसवी शताब्दी के कवि रहे है इनकी कविताओ का मूल्याकंन करना बस अपने को दिलाशा देना ही है उन्होने कविता के दो युगो को रेखाकिंत किया है छायावाद और उसके बाद कविता के विकास और उसके प्रतिमानों को जन के लिए जो प्रस्तुत किया वह सदैव के लिए आधुनिक हिन्दी कविता के युग में स्वर्ण अक्षरों में रेखाकिंत हो चुका है उन्होने अपने कृतियों में जो प्रतिमान रचे है वह नई पीढी के लिए सदैव मार्ग दर्शक के रूप में याद किये जायेगें।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*